कलाकारों के प्रिय कलाप्रेमी गाँधी

डॉ0 विनीता शर्मा
प्रवक्ता, आई0 एन0 पी0 जी0 महिला विद्यालय, मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 विनीता शर्मा,
कलाकारों के प्रिय कलाप्रेमी गाँधी,
Artistic Narration 2017,
Vol. VIII, No.2, pp.82- 87
http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

महात्मा गाँधी इस युग के प्रसिद्ध व्यक्तियों में से थे इसमें कुछ संदेह नहीं। भारत की जनता पर उनका बड़ा प्रभाव रहा और भारत के बाहर भी उनके नाम से सभी परिचित हैं। उनके व्यक्तिगत महत्व के लिए संसार में बड़ा कौतूहल है। वह अहिंसा के बड़े भारी प्रचारक माने जाते हैं। "मेरे लिए सत्य से परे कोई धर्म नहीं है और अहिंसा से बढ़कर कोई परम कर्तव्य नहीं है "गाँधी (हरिजन)। बाहर के देशों के भी अनेक ग्रंथ–लेखकों ने उनके अहिंसावाद की चर्चा भी की है। गाँधी जी ने कहा है – "मैं संसार को नया संदेश देने आया हूँ।" उन्होंने ऐसा जीवन जिया जो औरों के लिए आदर्श बन गया।

कला के सम्बन्ध में बात की जाय तो गाँधी जी के विचार इस प्रकार हैं–"जीवन में सबसे बड़ी कला तपस्या है" इस प्रकार से तो उनका जीवन खुद ही कलामय बन गया। जीवन जीना भी एक कला है और इस कला को उन्होंने श्रेष्ठ माना है उन्होंने कहा – "जिसने उत्तम जीना जाना, वही कलाकार है।" "जीवन की पवित्रता सबसे ऊँची और सबसे अच्छी कला है।[1]

गाँधी जी की सौंदर्य की अवधारणा प्रकृति और व्यक्ति से जुड़ी हुई है। वह केवल चाक्षुष या भौतिक सौंदर्य हदय की शुद्धता में मानते है। गाँधी जी के शब्दों में– "सच्चा सौन्दर्य तो गुण में ही होता है।" वह परमात्मा को सबसे बड़ा कलाकार मानते हुए उनकी कर्षति को सर्वोत्कृष्ट मानते थे। वास्तव में हम उन महान कलाकार की कलाकृति की अनुकृति करने की कोशिश तो करते हैं पर उसमें जान तो नही डाल सकते। गाँधी जी ने महान कलाकार (ईश्वर) की कला को महत्ता दी है। उनके शब्दों में– "मै पुजारी तो सत्य रूपी परमेश्वर का ही हुँ, वह एक ही सत्य है और दूसरा सब मिथ्या।"

प्रकृति के सौंदर्य को गाँधी जी सर्वोपरि रखते हैं। उनके विचार हैं – "प्रकर्षति के सौंदर्य के सामने मानव–निर्मित सब कलाओं का सौंदर्य तुच्छ है। आकाश और पष्थ्वी का सौंदर्य कला–रसिक को आनन्द देने के लिए काफी है। उस कला का स्वाद जो नहीं ले सकता, वह यदि मनुष्य निर्मित कला का शौकीन समझा जाता हो तो वह मोहक दृश्यों को ही कला समझने वाला होगा, सच्ची कला का उसे ज्ञान नहीं।" गाँधी जी की प्रकृति में सौंदर्य देखने की दृष्टि से हम अनेक प्रसंगों में परिचित होते है। एक बार गुजरात के गाँव कालीपरज में 18 जनवरी 1925 में परिषद की एक बैठक में गाँधी जी गए वहाँ की साज–सज्जा से वह प्रभावित हुए। वहाँ हरे पत्ते और बाँसों से मंच सजाया गया था मंच पर चढने के लिए रेत के बोरों की सीढी बनाई गई थी। रास्ते के दोनों ओर बाँस लगाकर उन पर हरे पत्ते और लताएँ बाँधी गई थी। इस स्वाभाविक सौंदर्य को देखकर गाँधी जी ने कहा– "मानो अदृश्य रूप से स्वयं प्रकृति ने आकर वहाँ सजावट की है। कुदरत से सीख लेना और उसे किसी प्रकार का आघात न पहुँचाना यही सच्ची कला है।" सच्ची कला के प्रति उनके अपने ही विचार थे। आगे उन्होंने कहा– "जहाँ आकाश का वितान हो और रेत का आसन, वहाँ तो वृक्ष–पात ही शोभा दे सकते है।"

गाँधी जी सौंदर्य को महत्व तो देते थे किन्तु प्राकृतिक सौंदर्य का स्थान यदि कृत्रिम वस्तुएँ ले लें तो उनका कला प्रेमी मन विचलित हो जाता था और बड़े कठोर शब्दों में उसकी आलोचना भी कर देते थे। कालीपरज में ही एक चरखा प्रदर्शनी में बालक, वृद्ध सभी चरखा चला रहे थे। वहाँ कागज की रंगबिरंगी झंडियों से मंडप की सजावट कर रखी थी। इस सजावट के बारे में गाँधी जी ने टिप्पणी की – "कागजों की सजावट न बुद्धि जाहिर करती है, न सुरूचि। यह तो मानो नींद बेचकर अनिद्रा रोग मोल लेने जैसी बात है। जहाँ–जहाँ मैं कागज की सजावट देखता हूँ, कला की इस हत्या पर मुझे क्रोध आता है।" हरिजन पत्रिका में गाँधी जी ने लिखा– " हम रंगों की सुन्दरता को सब्जियों में क्यों नहीं देख पाते? और फिर बेदाग आकाश का भी तो सौंदर्य है। लेकिन नहीं, आपको तो इन्द्रधनुष के रंग चाहिए जो केवल दृष्टि भ्रांति है। जो वस्तु सुन्दर है जरूरी नहीं वह उपयोगी हो, और जो उपयोगी है वह सुन्दर नहीं हो सकती ऐसा मान लेना हमें सिखाया गया है। " गाँधी जी के विचार में किसी वस्तु का उपयोगी होना और सुन्दर होना परस्पर विषम या विरोधी गुण नहीं थे। उन्होंने कहा है–" कला को उपयोग से अलग नहीं किया जा सकता हाँ उपयोग का अर्थ विशाल करना चाहिए।"

कई बार ऐसा होता है कि जिस वस्तु को हम रोज देखते हैं उसके सौंदर्य के प्रति हमारा ध्यान ही नहीं जाता। इस अनन्त स्वच्छ आसमान को देखकर यदि हमारे मन में किसी प्रकार के भाव नहीं जागते तो गाँधी जी ऐसे लोगों के बारे में स्पष्ट शब्दों में कहते है कि उनमें किसी भी वस्तु में सुन्दर देखने की क्षमता नही है। इसमें गाँधी जी ने मानव मन की उस सौंदर्य–दृष्टि के प्रति इशारा किया है।

डॉ0 विनीता शर्मा

जिसके कारण मनुष्य सूक्ष्म एंव उदात्त संवेदनाओं का धनी माना जाता है। इन्हीं संवेदनाओं को माँजते–माँजते मनुष्य सत्य शिव और सुन्दर की अनुभूति करता है। गाँधी जी कहते हैं कि –"सर्वप्रथम सत्य को खोजना है और तब सुन्दर एवं शिव आपमें समाहित हो जाएँगे।"

गाँधी जी ने आश्रम की बहनों को एक बार कहा था कि – "सच्ची कला सरल और सहज होती है। उसके लिए कलाकार को प्रवक्ता बनाने की, उससे अपनी कला की व्याख्या करवाने की आवश्यकता नहीं है।" वह जानते थे कि साहित्य और कला दोनों ऐसे हों कि जो लोगों को स्वयं अपनी बात स्पष्ट कर सकें। 22 अक्टूबर 1924 को गाँधी जी के सहयोगी एन्ड्रूज के शिष्य रामचन्द्रन से शांति निकेतन में गाँधी जी ने कहा– "मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि मेरे जीवन में सचमुच कला का यथेष्ठ समावेश है, यद्यपि मेरे चारों तरफ जिन्हें आप कला की कृतियाँ कहते हैं, उनका प्रदर्शन नहीं है। मैं कला के बाहरी रूप का नहीं, आंतरिक सौंदर्य का पुजारी हूँ। जो कला आत्मा को ऊपर उठाने में नहीं, नीचे गिराने में कारगर हो, उससे मेरा कोई सरोकार नहीं।"

महाराष्ट्र के 'गाँधी विद्यालय' के पाठ्यक्रम में एक विषय था 'गाँधी जी के सिद्धान्त और विचारों का परिचय'। इस विषय की तैयारी के दौरान श्री किशोरी लाल मशरूवाला ने एक पुस्तक लिखी 'गाँधी विचार दोहन'। इसमें लिखे गाँधी जी के विचारों को गाँधी जी ने पढ़कर अपनी सम्मति दी। इसमें गाँधी जी के विचार इस प्रकार हैं –प्रकृति में स्थित सौंदर्य को समझने वाले को ही सच्ची कला का ज्ञान है। सच्ची कला अच्छे साहित्य की भांति विचारों को उपस्थित करने का साधन है। कला का सम्बन्ध नीति, हितकरता और उपयोगिता से नहीं है केवल सौंदर्य से ही है– यह कहना सौंदर्य और कला को न समझने के जैसा है। सत्य ही ऊँची से ऊँची कला और श्रेष्ठ सौंदर्य है और वह नीति, हितकरता तथा उपयोगिता से रहित नहीं हो सकता। कला का स्थान मनुष्य जीवन के लिए उपयोगी साधन सामग्रियों मे होना चाहिए और कला के कारण वे पदार्थ सुन्दर लगने के अतिरिक्त अच्छी तरह काम देने वाले भी होने चाहिए।

गाँधी जी के कलाकार मन ने सूत कातने की कला को भी बहुत अधिक महत्व दिया। वह स्वयं भी चरखा चालते थे और कहते थे – "खादी की जड़ सत्य और अहिंसा में है।" उनके शब्दों में– "चरखे में नीतिशास्त्र भरा है, अर्थशास्त्र भरा है। और अहिंसा भी भरी है।" एक बार जब गाँधी जी नोआखाली के देवीपुर गांव में गये तो वहाँ उनके स्वागत में गाँव वालों ने गाँव को फूलों, रेशम की पट्टियों, रंग बिरंगे कागज आदि से सजाया। यह सजावट देखकर गाँधी जी प्रसन्न होने के बजाय गंभीर हो गये बोले– यह सब सजावट एक क्षण भर में कुम्हला जाएगी फूलों के हार के बजाय यदि इतने ही सूत के हार पहनाते तो सजावट भी होती और बाद में वे कपड़े बनाने के काम आते।" दैनिक जीवन की बहुत सी ऐसी छोटी–छोटी घटनाएँ हैं जिनसे गाँधी जी के भीतर के कलाकार से हम परिचित होते हैं। विष्णु प्रभाकर द्वारा सम्पादित एक पुस्तक में छपी एक घटना इसका उदाहरण है। एक बार एक बूढ़ा आदमी गाँधी जी के पास आकर बोला 'कोई पुराना जूता हो तो दिला दें मुझे यह नये फैशन के पसन्द नहीं, पुराना ओखाई जूता ही पसंद है और मैं चर्मालय जा नहीं सकता। गाँधी जी बोले– "लाओ, मुझे कार्ड–बोर्ड का टुकड़ा दो। मैं इसका ओखाई जूते का नमूना बना दूंगा और इस नमूने के अनुसार जोड़ा बना देने के लिए मोची को कहला दूंगा।" यह कहकर गाँधी जी ने तीस वर्ष पहले देखे हुए जोड़े की बनावट याद करके

कार्ड बोर्ड पर नमूना तैयार कर दिया। इस प्रकार जूते का वह हू–ब–हू नमूना देखकर सभी अचरज में पड़ गये। यह था उनका कलाकार मन।

दूसरे के द्वारा बँधी टाई बाँधना उन्हें पसन्द नहीं था इसलिए टाई बाँधने की कला हस्तगत की।

अनेक घटनाओं पर दी हुई गाँधी जी की प्रतिक्रियाओं को देखकर उनके कला के प्रति विचारों से हम अवगत होते है। उनका मानना था कि वही कला है जो मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाए और यह कार्य धर्म भी कर सकता है। लन्दन में 'आइलैण्ड' नामक एक पत्रिका में गाँधी जी का एक वक्तव्य छपा जिसमें कला और धर्म के परस्पर सम्बन्ध के बारे में गाँधी जी के विचार व्यक्त होते है – "धर्म लोगों को जिसकी शिक्षा देता है। कलाकार उसी को धरातल पर शिल्प के रूप में उनके निकट लाता है। कला की धर्म से इस बात में गहरी समानता है कि उन दोनों में मूल अनुभूति का क्षेत्र मनुष्य का ईश्वर से सम्बन्ध होता है। भारतीय कला इस सम्बन्ध को प्रतीकों में व्यक्त करती है। कला के बारे में कुछ जानने का मैं दावा नहीं करता, पर मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि धर्म और कला दोनों को नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान के एक जैसे उद्देश्यों की पूर्ति करनी है।"

गाँधी जी की साधारण वेशभूषा और सादा जीवन ने कलाकारों को आकृष्ट किया। उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व ने कलाकारों को इतना प्रभावित किया कि वह चित्र बनाने के लिए कलाकारों के प्रिय विषय बन गये। कलाकार की कलाकृति समाज के सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक वातावरण का दर्पण होता है। गाँधी जी, जो कि एक महान व्यक्ति थे, स्वतंत्रता संग्राम उनके नेतष्त्व में चल रहा था। 19वीं शताब्दी के अन्त में और 20वीं शताब्दी के आरम्भ में कलाकारों ने देशभक्ति और आजादी से सम्बन्धित चित्र बनाये। कलाकारों ने आजादी की लड़ाई को चित्र के विषय के रूप में प्रयुक्त किया गया। वे कलाकार महसूस करते थे स्वदेशी के लिए और राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए यह एक प्रकार से सेवा है। समाज में जागरूकता लाने के लिए गाँधी जी कलाकारों को प्रोत्साहित करते थे। जब गाँधी जी को स्वतंत्रता सेनानी के रूप में पहचाना गया तो भारतीय और विदेशी कलाकारों के द्वारा गाँधी जी अनेक व्यक्ति–चित्र बनाए गये।

नन्दलाल बोस, जो शांतिनिकेतन के कलाकार थे, उन्होंने महात्मा गाँधी के जीवन से प्रेरणा ली तथा अन्य कलाकारों को भी प्रेरित किया। उन्होंने कहाः– "महात्मा गाँधी पेशेवर कलाकार तो नहीं हैं, जैसे हम है। पर उससे कम भी नहीं हैं। वह एक सच्चे कलाकार हैं, उनका सारा जीवन अपने सिद्धान्तों की ओर प्रेरित करने में लगा रहा। उनका आदर्श व्यक्तिगत संसार के कलाकारों को प्रेरित करता रहेगा।" 1930 ई0 में दांडी यात्रा के दौरान जब गाँधी जी एक महान विभूति बन गये थे, उस समय का उदाहरण नन्दलाल बोस का बनाया विश्व विख्यात चित्र लिनोकट है इस श्वेत–श्याम लिनो–कट को शीर्षक दिया है 'बापू जी'। इसमें गाँधी जी ने लाठी को जिस तरह पकड़ा है और एक पैर आगे बढाया है, इससे कलाकार मानो उनके आत्मविश्वास से भरपूर नेतृत्व को साकार कर रहे हैं। यह असहयोग आन्दोलन पर बनाये गये बहुत से चित्रों में से एक है। दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय में इस लिनो–कट का एक विशाल शिल्प सीमेंट से बनाया गया है।

गाँधी जी को नन्द लाल बोस के कला–कौशल पर बहुत विश्वास था। 1936 में गाँधी जी ने नन्दलाल बोस को लखनऊ में कांग्रेस का सभागार सजाने के लिए कहा, उन्होंने अपनी टीम के साथ

घास–फूस, बाँस, लकड़ी की मदद से बहुत ही सरलता से हॉल को सजाया। गाँधी जी ने उनके कार्य को बहुत सराहा। किन्तु गाँधी जी की सौंदर्यदर्शी दृष्टि देखिए कि वहाँ मेज के नीचे एक बाल्टी लापरवाही से रह गई और उस ओर किसी का ध्यान नहीं गया। गाँधी जी की नजर उस पर गई और वह बोले– "क्या यह तुम्हारी सौंदर्यनुभूति में बाधा नहीं डाल रही।" 25 दिसम्बर 1936 ई0 में फैजपुर (महाराष्ट्र) में एक कांग्रेस सभागार को गाँधी जी कहने पर नन्दलाल बोस ने सजाया। गाँधी जी सजावट से खुश होकर बोले ––"वह (नन्दलाल बोस) एक सृजनशील कलाकार हैं और मैं नहीं हूँ। भगवान ने मुझे कला की समझ तो दी है पर उसे रूप देने की क्षमता नहीं दी। नन्दलाल बोस को दोनों चीजें एक साथ आशीर्वाद रूप में दी है। फरवरी 1939 ई0 में कांग्रेस अधिवेशन गुजरात के हरिपुरा गांव में हुआ। वहाँ की साज सज्जा का दायित्व भी नन्दलाल बोस का था। उनको गाँधी जी ने यह परामर्श दिया कि वह हरिपुरा कांग्रेस के अधिवेशन में लोक जीवन विषयक चित्र बनाएँ। गाँधी जी विशिष्ट जनों की कला के पक्षधर नहीं थे। अतः नन्दलाल बोस ने जो चित्र बनाये वे लोक शैली में बनाये उनके विषय नाई, धोबी, किसान, मछली काटती महिला आदि थे। ये 'हरिपुरा पोस्टर्स' कहलाए।

मुकुल डे (शांतिनिकेतन के कलाकार)1918 ई0 में पहली बार गाँधी जी से मिले और उनका व्यक्तिचित्र बनाने की इच्छा जाहिर की। गाँधी जी कुछ नहीं बोले बस मुस्कुरा दिये। कुछ समय बाद मुकुल डे उनका चित्र बनाने में लग गये। उनमें उन्होंने एक महान संत और एक राजनैतिक नेता पाया। चित्र देखकर गाँधी जी बोले– "क्या मैं ऐसा ही दिखता हूँ।" उन्होंने डे के कहने पर गुजराती में हस्ताक्षर कर दिये। दस वर्ष बाद जब डे की मुलाकात गाँधी जी से हुई तो वह आश्चर्य चकित थे कि गाँधी जी ने उन्हें पहचान लिया और साबरमती आश्रम में उन्हें रहने की अनुमति दे दी। डे ने गाँधी जी के पेंसिल स्कैच और एक व्यक्ति चित्र कस्तूरबा जी का बनाया। गाँधी जी ने उन्हें साबरमती में से आधी बिल्डिंग में आर्ट स्कूल शुरू करने का सुझाव दिया।

शांति निकेतन के छात्र और जाने माने कलाकार के0 वेंकटप्पा के चित्रों से गाँधी जी प्रभावित हुए। उनसे गाँधी जी ने कहा– "मैं प्रसन्न हूँ, तुम्हें मेरा आशीर्वाद हैं। किन्तु तुम्हें मेरा एक सुझाव है कि यदि तुम यह बना सको कि चरखा ग्रामीणों के जीवन में क्या मायने रखता है, तब मैं ज्यादा प्रसन्न होऊँगा।"

विनायक एस0मसोजी ने गाँधी जी का एक चित्र बनाया था, जब गाँधी जी दांडी यात्रा के दौरान जेल गये थे। चित्र का नाम था 'द मिड नाइट अरैस्ट'।

लोक कला से प्रेरित प्रसिद्ध कलाकार यामिनी राय ने गाँधी तथा टैगोर का चित्र बनाया था।

उपेन्द्र महारथी ने गाँधी जी के जीवन पर आधारित रेखाचित्रों का एक एलबम तैयार किया और वाश शैली में चित्र बनाये।

शिल्पकार राम सुतार का बनाया हुआ ध्यान मुद्रा में बैठे गाँधी जी का 16 फिट ऊँचा शिल्प संसद भवन के बाहर स्थित है। यह भव्य शिल्प 1992–93 में बनाया गया था।

देवी प्रसाद रॉय चौधरी का बनाया हुआ एक बहुत बड़ा कांसे का शिल्प 'दाण्डी मार्च' दिल्ली के सरदार पटेल मार्ग पर है।

'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के 5 अक्टूबर 1969के एक लेख के अनुसार सन् 1969 में राजघाट पर 'गाँधी दर्शन' में चित्र तथा शिल्प बनाने वाले कलाकारों का वर्णन है। परितोष सेन, बीरेन डे, रामचन्द्रन, शांति दबे, हेब्बर और बद्री नारायण के गाँधी जी के दर्शन पर आधारित भित्ति चित्र हैं। एक खण्ड में बीरेन डे का विशाल तैल चित्र है, जो गाँधी जी के दर्शन को लेकर चलता है। दूसरे खण्ड में बद्रीनारायण ने टाइल्स पर चित्रण किया है। वह कहते हैं– "गाँधी जी बड़े सीधे–सादे व्यक्ति थे इसलिऐ मैंने अपने चित्र में कोई रंग नही दिया। केवल काले और सफेद का उपयोग किया है।"

भारतीय कलाकारों के साथ–साथ विदेशी कलाकारों और शिल्पकारों ने भी गाँधी जी के चित्र व शिल्प बनाये। सन् 1930 में जब गोलमेज सम्मेलन में गाँधी जी लन्दन में ठहरे तब जाने माने मूर्तिकार जो डेविडसन ने गाँधी जी की एक मूर्ति बनाई। वहाँ के और भी कई चित्रकारों ने गाँधी जी के चित्र बनाने की अनुमति माँगी। इनमें से जो नाम चन्दुलाल दलाल की 'गाँधीजीनी दिनवानी' में हैं, वे हैं– श्रीमती क्लॅर शेरडीन, सिस क्लॅरलेटन इन्होंने गाँधी जी की अर्ध मूर्तियाँ बनायीं।

एक रूसी कलाकार फेलिक्स टोपल्स्काई ने 1944–46 के बीच गाँधी जी के चित्र बनाये। उन्होंने बड़े धैर्य के साथ चित्र बनाये क्योंकि गाँधी जी ने बैठकर कोई चित्र नहीं बनवाया। परिणाम स्परूप गाँधी जी के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व को दिखाने वाले जल्दी जल्दी से बनाये गये रेखचित्र तथा पैन व ब्रश के तीव्र आघात के चित्र बने। गाँधी जी पोज बनाकर बैठना पसंद नहीं करते थे, कलाकार तीव्र रेखाचित्र बनाते थे।

गाँधी जी कला की सुरक्षा के लिए कला में विश्वास नहीं रखते थे। वह कला की बहुत इज्जत करते थे। पर वह मानते थे कि जब तक कला का ध्येय धार्मिकता को जोश के साथ ऊँचा उठाना नहीं हैं, तो यह कुछ नहीं हैं। कला तभी ऊँचाई तक पहुँचेगी तब यह धर्म को साथ लेकर चलेगी। यह उनका विश्वास था। बहुत से व्यक्ति चित्र आदि पर उनके हस्ताक्षर छोटे से संदेश के साथ मिलते है। जैसे कि एक रेखाचित्र पर 'ट्रूथ इज गॉड' इस संदेश के साथ उनके हस्ताक्षर 4 दिसम्बर 1931 हैं।

इस प्रकार हम देखते है कि गाँधी जी सौंदर्य के प्रति बहुत ही संवेदनशील थे। उस साधारण वेशभूषा वाले सरल व्यक्ति के भीतर कला को बहुत सम्मान देने वाला एक अनोखा कलाकार हमें दिखाई देता है। ऐसे कला प्रेमी महात्मा को शत्–शत् नमन। हे राम!